भगवती वन्दना

जय जय भैरवि असुर भयाञुनि पशुपति भामिनि माया ।
सहज सुमति वर दिअ हे गोसाञुनि अनुगत गति तुअ पाया ।।
वासर रञनि शवासन शोभित चरण चन्द्रमणि चूड़ा ।
कतओक दैत्य मारि मुख मेलल कतओ उगलि कएल कूड़ा ।।
सामर बरन नयन अनुरंजित जलद जोग फुल कोका ।
कट कट विकट ओठ-पुट पाँड़रि रुधिर फेन उठ फोंका ।।
घन घन घनय घुघुरु कत बाजय हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद-सेवक पुत्र बिसरु जनु माता ।।

(२)

कनक भूधर शिखर वासिनि, चन्दिका चय चारु हासिनि,
दशन कोटि विकास बंकिम, तुलित चन्द्र कले ।।
क्रुद्ध - सुररिपु - बलनिपातिनि, महिष - शुम्भ - निशुम्भ - घातिनि,
भीत - भक्त - भयापनोदन --- पाटल - प्रबले ।।
जय देवि दुर्गे दुरितहारिणि, दुर्गमारि - विमर्द - कारिणि,
भक्ति - नम्र - सुरासुराधिप --- मंगलायतरे ।।
गगन - मंडल - गर्भगाहिनि, समर - भूमिषु सिंहवाहिनि,
परशु - पाश - कृपाण - सायक --- शंख - चक्र - धरे ।।
अष्ट भैरवि संग शालिनि, सुकर कृत्त कपाल मालिनि,
दनुज शोणित पिशित वर्द्धित पारणा रभसे ।।
संसार बन्ध निदान मोचनि, चन्द्र भानु कृशानु लोचनि,
योगिनी गणगीत शोभित, नृत्यभूमि रसे ।।
जगति पालन जनन मारण रूप कार्य सहस्र कारण,
हरि विरंचि महेश शेखर चुम्ब्यमान पदे ।।
सकल पाप कला परिच्युति सुकवि विद्यापति कृतस्तुति,
तोषिते शिवसिंह भूपति कामना फलदे ।।

नचारी

आजु नाथ एक व्रत महा सुख लागत हे ।
तोंहे शिव धरु नट वेश कि डमरू बजाबह हे ।।
तोहें त कहै छह गौरी नाचय हमे कोना नाचब हे ।
चारि सोच मोहे होय कबन विधि बाँचब हे ।।

अमिय चुबिय भुमि खसत बघम्बर जागत हे ।।
होयत बघम्बर बाघ बसहा धरि खायत हे ।।
सिर सञो ससरत साँप पुहुमि लोटायत हे
कार्तिक पोसल मयूर सेहो धरि खायत हे ।।
जटा सञो छिलकत गंग भुमि भरि पाटत हे ।
होयत सहस्त्र मुख धार समेटलो ने जायत हे ।।
मुण्डमाल टुटि खसत मसानी जागत हे ।
तोंहे गौरी जएबह पड़ाय नाच के देखत हे ।।
सुकवि विद्यापति गाओल गाबि सुनाओल हे ।
राखल गौरी केर मान चारू बचाओल हे ।।

नचारी

हम नहि आजु रहब एहि आँगन, जञो बुढ़ होयत जमाय गे माई।
एक तञो बैरि भेल बीध बिधाता, दोसर धियाकेर बाप ।
तेसर बैरि भेल नारद बाभन, जे बुढ़ आनल जमाय, गे माइ ।।
पहिलुक बाजन डामरु तोड़ब, दोसरे तोड़ब रुंडमाल ।
बड़द हाँकि बरियात बैलायब, धिया लय जायब पड़ाय, गे माई ।।
धोती लोटा पोथी-पतरा, सेहो सभ लेबन्हि छिनाय ।
जञो किछु बजता नारद बाभन, दाढ़ी धय घिसिआय, गे माई ।।
भनइ विद्यापति सुनु हे मनाइन, दिढ़ करु अपन गेयान ।
शुभ शुभ कए शिव-गौरि बिआहू, गौरी-हर एक समान, गे माई ।।

महेशवाणी

उगना रे मोर कतय गैला । कतय गैला शिव किदहुँ भैला ।।
भाँग नहि बटुआ रुसि बैसला । जोहि हेरि आनि देल हँसि उठला ।।
जे मोरा कहता उगना उदेस । तन्हिको देब कर कँगना बेश ।।
नन्दन वनमे भेटल महेश । गौरी मन हरखित मेटल कलेश ।।
विद्यापति भन उगना सञो काज । नहि हितकर मोरा त्रिभुवन राज ।।

गंगा स्तुति

बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे । छोड़इत निकट नयन बहु नीरे ।।
कर जोरि बिनमओं विमल चरंगे । पुनि दरसन हो पुनमति गंगे ।।
एक अपराध क्षमब मोर जानी । परसल माय पाय तुअ पानी ।।

कि करब जपतप योग धेयाने । जनम कृतारथ एकहि सनाने ।।
भनहि विद्यापति समदओं तोही । अंत काल जनु विसरहु मोही ।।

वयःसंधि

सैसब जउवन दुहु मिलि गेल । श्रवणक पथ दुहु लोचन लेल ।।
वचनक चातुरि लहु लहु हास । धरनिए चाँद कयल परगास ।।
मुकुर लई अब करइ सिङार । सखि पूधइ कइसे सुरत विहार ।।
निरजने उरज हेरइ कत बेरि । हँसइ से अपन पयोधर देखि ।।
पहिल बदरि सम पुन नवरंग । दिन-दिने अनंग अगोरल अंग ।।
माधव पेखल अपरुब बाला । सैसव जउवन दुहु एक भेला ।।
विद्यापति कह तुहु अगेआनि । दुहु एक जोग इह के कह सेयानि ।।

नख-सिख

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे ।
कतेक जतन बिहि ञानि समारल देखल नयन सरूपे ।।
पल्लवराज चरण-जुग सोभित, गति गजराजक भाने ।।
कनक कदलि पर सिंह समारल, तापर मेरु समाने ।।
मेरु उपर दुइ कमल फुलाएल, नाल विना रुचि पाई ।
मणिमय हार धार बहु सुरसरि, तञे नहि कमल सुखाई ।।
अधर बिम्ब सन दसन दाड़िम-बिजु, रवि शशि उगथिक पासे ।।
राहु दूर बस नियरो न आबथि, तञे नहि करथि गरासे ।।
साराँग नञन वञन पुनि साराँग, केलि करथि मधुपाने ।।
भनइ विद्यापति सुन वर जउवति, इह रस केओ पए जाने ।।
राजा सिवसिंह रूपनराञेन लखिमा देइ रमाने ।।

नोक-झोंक

कर धरि करु मोहि पारे । देव मोञे अपरुब हारे, कन्हैया ।।
सखि सभ तेजि चलि गेली । न जानि कञोन पथ भेली, कन्हैया ।।
हम न जाएब तुअ पासे । जाएब औघट घाटे, कन्हैया ।।
विद्यापति एहो भाने । गूजरि भजु भगवाने, कन्हैया ।।

सखी-सम्भाषण

कि कहब हे सखि रातुक बात । मानिक पड़ल कुवानिक हाथ ।।
काच कञ्चन नहि जानय मूल । गुञ्जा रतन करय समतूल ।।
जे किछु कभु नहि कला रस जान । नीर खीर दुहु करए समान ।।
तन्हि सञो कैसन पिरीत रसाल । बानर -कंठ कि मोतिम माल ।।
भनइ विद्यापति िह रसजान । बानर - मुँह की सोभए पान ।।

विदग्ध-विलास

आजुक लाज तोहें कि कहब माइ । जल दय धोइ जदि तबहु न जाइ ।।
नहाइ उठलि हमे कालिन्दी तीर । अंगहि लागल पातर चीर ।।

तें बेकत भेल सकल सरीर । ताहि उपनीत समुख समुख जदुवीर ।।
बिपुल नितम्ब अति बेकत भेल । पलटि ताहि पर कुंतल देल ।।
उरज उपर जब देलन्हि दीट । उर मोड़ि बइसलहुँ हरि करि पीठ ।।
हँसि मुख मोड़ए ढीठ कन्हाइ । तनु झँपइते झाँपल नहि जाइ ।।
विद्यापति कह तोहं अगेआनि । पुनु काहे पलटि न पैसलि पानि ।।

(२)

बिगलित चिकुर मिलित मुख मंडल चाँद वेढल घनमाला ।
मणिमय कुंडल श्रवणे दुलित भेल घामे तिलक बहिगला ।।
सुन्दरि तुअ मुख मङ्गल-दाता ।
रति - विपरीत सय यदि राखवि कि करब हरि हर धाता ।।
किंकिणि किनि-किनि कंकण कन-कन घन-घन नूपुर बाजे ।
रति-रणे मदन पराभव मानल जय-जय दुन्दुभि बाजे ।।
तिल एक जघन सघन रब करिते बए गेल सेनक भंग ।
विद्यापति पति ओ रस - गाहक जामुन मिलि गेल गंग ।।

वसंत

नव बृन्दाबन नव नव तरुगण नव नव विकसत फूल ।
नवल वसंत नवल मलयानिल मातल नव अलि - कूल ।।
बिहरइ नवलकिशोर ।
कालिन्दि-पुलिन कुंजवन शोभन नव-नव प्रेम-विभोर ।।
नवल रसाल -मुकुल- मधु -मातल नव कोकिल - कुल गाव ।
नव युवतीगण चित उमताअइ नव रसे कानन धाव ।।
नव व्रजराज नवल वर नागरि मीलय नव-नव भाँति ।
नित नित अइसन नव- नव खेलन विद्यापति मति माति ।।

(२)

बाजत द्रिगि - द्रिगि धोद्रिमि द्रिमिआ ।
नटति कलावति माति श्याम संग करे करु ताल प्रबन्धक धनिआ ।।
डम-डम डंफ डिमिक-डिम मादल रुनु-जुनु मंजिर बोल ।
किंकिनि रन-रनि बलया कन-कनि निधुवने रास तुमुल उतरोल ।।
बीन रवाब मुरज सरमंडल स रि ग म प ध नि स बहुविध भाव ।
घेटिता-घेटिता घृणि मृदंग धुनि चचल सवरमंडल करुराव ।।
श्रम -भरे गलित ललित कबरीयुत मातलि-माल बिथारल मोति ।
समय वसंत रास -रस वर्णने विद्यापति - मति छोभित होति ।।

विरह

(१)

माधव, तोहें जनु जाह बिदेसे ।
हमरो रंग -रभस लय जयबह, लयबह कओन संदेसे ।।
वनहि गमन करु होइति दोसर मति, बिसरि जायब पति मोरा ।।
हीरा मनि मानिक नहि माँगब, फेर माँगब पहु तोरा ।।
जखन गमन करु नयन नीर भरु , देखि न भेल पहु ओरा ।।
एकहि नगर बस, पहु भेल परबस, कइसे पुरत मन मोरा ।।
पहु सँग कामिनि बहुत सोहागिनि, चान्द निकट जइसे तारा ।।
भनइ विद्‌ापि सुन बरजउवति, अपन हृदय धरु सारा ।।

(२)

माधव हमर रटल दुर देश । केओ न कहए सखि कुसल - सन्देस ।।
जुग- जुग जिबथु बसथु लक कोस । हमर अभाग हुनक नहि दोस ।।
हमर करम भेल बिहि विपरीत । तेजल माधव पुरबिल प्रीत ।।
हृदयक बेदन बान समान । आनक दुःख आन नहि जान ।।
भनइ विद्यापति कवि जयराम । दैब लिखल परिणत फल बाम ।।

(३)

सखि हे हर दुखक नहि ओर ।
ई भर बादर माह भादर सून मंदिर मोर ।।
झंझा घन गरजन्ति संतति भुवन भरि बरसंतिया ।
कन्त पाहुन काम दारुन सघन खर सर हंतिया ।।
कुलिश शत-शतपात मोदित मोर नाचत मातिया ।
मत्त दादुर डाके डाहुकि फाटि जायत छातिया ।।
तिमिर-भरें अति घोर जामिनि दरके दामिनि पाँतिया ।
विद्यापति कह कइसे निरबह हरि विना दिन रातिया ।।

(४)

के पतिया लय जयत रे, मोरा पिअतम पास ।
हिय नहि सहय अह दुक रे, भेल साओन मास ।।
एकसरि भवन पिआ बिनु रे , मो॰ा रहलो ने जाए ।
सखि अनकर दुख दारुन रे, जग के पतिआय ।।
मोर मन हरि हरि लए गेल रे, अपनो मन भेल ।
गोकुल तजि मधुपुर बसि रे, कत अपजस लेल ।।

विद्यापति कवि गाओल रे, धनि धरु मन आस ।
आओत मोर मन-भाओन रे, एहि कातिक मास ।।

(५)

सुतलि छलहुं हम घरबा रे , गरबा मोति-हार ।
राति जखन भिनुसरबा रे , पिया आयल हमार ।।
कर कौशल कर कँपइत रे, हरबा उर टार ।।
कर पंकज उर थपइत रे, मुख चन्द्र निहार ।।
केहन अभागलि बैरिनि रे, भाँगलि मोर निन्द ।।
भल कए नहि देखि पाओल रे, गुणमय गोविन्द ।।
विद्यापति कवि गाओल रे, धनि मन धरु धीर ।।
समय पाए तरुवर फड़ रे, कतबो सिचु नीर ।।